श्रीगुरु चरण पद्म, केवल भकति सद्म, वन्दो मुई सावधान मते

अपनी भक्तिको पल्लवित करनेके लिए, हमें श्रील नरोत्तम दास ठाकु
यह पद सदैव स्मरण रखना चाहिए। इसके गूढ़ अर्थकी चर्चा आगे की गई है।

'श्रीगुरु' का अर्थ वास्तवमें श्रीमती राधारानी हैं, जो श्रीकृष्णकी आह्लादिनी शक्ति हैं। यद्यपि हम कभी-कभी ऐसा कहते हैं कि श्रीकृष्ण ही जगद्गुरु हैं, परन्तु वास्तवमें सारस्वत गौड़ीय वैष्णवों एवं उनके अनुयायियों का यही दृढ़ विश्वास है कि श्रीमती राधारानी ही हमारी मुख्य गुरु हैं।

वास्तवमें गुरु वही हैं जो समस्त जीवोंको आचरण-पूर्वक शिक्षा दें। वैष्णव परम्पराके अनुसार, एक गुरुको एक ऐसे पूर्व गुरु द्वारा नियुक्त किया जाना चाहिए, जो एक प्रामाणिक गुरु-परम्परासे हों। जो स्वयं आचार करके शिक्षा दें, एवं जो अपना जीवन सम्पूर्ण रूपसे भगवान्‌की सेवामें लगा चुके हों, ऐसे प्रामाणिक गुरुको 'आचार्य' कहते हैं। अतः, श्रीमती राधिका ही हमारी परम्पराकी प्रमुख आचार्य हैं, क्योंकि वे सदैव ही अपने सब कार्योंसे हमें श्रीकृष्णको सुख पहुँचानेके कु
माध्यमोंकी शिक्षा प्रदान करती रहती हैं। हमारी भक्तिका चरम लक्ष्य प्रत्येक भावना एवं कार्यसे भगवान् श्रीकृष्णको सुख प्रदान करना है। श्रीमती राधारानी इसकी प्रतिमूर्त्ति हैं। स्वयं श्रीकृष्ण यह कहते हैं कि श्रीमती राधारानीकी कृपाके बिना कोई उनकी कृपाको प्राप्त नहीं कर सकता। अतः, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि श्रीमती राधारानी ही हमारी मुख्य गुरु अथवा आचार्य हैं।

अगले दो शब्दों-'चरण पद्म' का तात्पर्य आचार्यके चरण कमल हैं। 'चरण' का अर्थ है पद, एवं पद्मका अर्थ है कमल। कमल इतना विशेष क्यों है? कमल एक अत्यन्त सुन्दर एवं सुगन्धसे युक्त पुष्प होता है, जिसके भीतर बहुत उच्च कोटिका रस होता है। स्वभावसे ही कमल सूर्योदयके साथ खुल जाता है (अर्थात् अपनी पंखुड़ियाँ खोल लेता है), और सूर्यास्तके साथ बन्द हो जाता है। उसके खुले रहने पर उसकी सुगन्ध अथवा रसका आस्वादन किया जा सकता है, परन्तु उसके बन्द हो जाने पर ऐसा करना असम्भव है। इसी प्रकार आचार्यकी कृपा सूर्यकी किरणोंके समान है, जो हमारे हृदय रूपी कमलको खोल कर हमें भक्ति रूपी रसका आस्वादन कराती हैं।

जब हम अपने जीवनको सम्पूर्ण रूपसे श्रीगुरुकी आज्ञाके अनुसार चलाएँगे, उस समय हम उनकी कृपा प्राप्त करनेके योग्य बनेंगे। उनकी कृपासे हमें निष्ठा-पूर्वक भजन करनेका उत्साह मिलेगा, जिससे हम भक्ति रसका आस्वादन कर सकेंगे।

'चरण' शब्दका गूढ़ अर्थ क्या है? पहले हमें यह समझना होगा कि गुरु श्रीमती राधारानीके प्रतिनिधि हैं, जो कि श्रीकृष्णकी आह्लादिनी शक्ति हैं, एवं उनसे अभिन्न हैं। अतः, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि गुरु भी श्रीकृष्णसे अभिन्न हैं। 'चरण' शब्दसे यह सूचित होता है कि हमें श्रीश्रीराधा-कृष्णके प्रति पूर्ण रूपसे समर्पण करनेकी आवश्यकता है। हमें ऐसा अपने श्रीगुरु एवं अपनी सम्पूर्ण गुरु परम्पराके माध्यमसे करना है।
समर्पणके महत्वकी कोई तुलना नहीं है। यह भक्ति-मार्गका प्रथम चरण है। श्रीगुरुके प्रति समर्पणके बिना हमारा समस्त साधन व्यर्थ है, उसमें कोई हृदय अथवा प्राण नहीं है। श्रीगुरु श्रीकृष्णके प्रति उनकी सेवाके लिए श्रीमती राधारानीके समर्पणको दिखाते हैं।
हमारे इस जगतमें मनुष्य शरीर धारण करनेका एकमात्र उद्देश्य श्रीकृष्णकी सेवा करना है। वाराणसीमें श्रीचैतन्य महाप्रभु एवं श्रीसनातन गोस्वामीके मध्य हुए वार्तालापके अनुसार, सब जीव भगवान् कृष्णके नित्य दास हैं। श्रीमती राधारानीकी कृपाके बिना कोई श्रीकृष्णकी कृपा प्राप्त नहीं कर सकता। अतः श्रीमती राधिकाके चरणोंमें समर्पण ही श्रीकृष्णकी सेवा प्राप्त करनेका एकमात्र उपाय है।

अतः श्रील नरोत्तम दास ठाकु
भकतिका अर्थ है शुद्ध प्रेम, एवं सद्मका अर्थ है नित्य गृह। अतः हमारा नित्य गृह श्रीमती राधारानीके चरण-कमलोंमें है, जो शुद्ध प्रेमका मूर्तिमान स्वरूप हैं।

अब हम श्रीमती राधारानीके चरणोंकी महिमाके विषयमें श्रवण करेंगे। उनके चरणोंमें यह १९ मङ्गलमयी चिह्न हैं—
१) यज्ञ-वेदी—इस चिह्नका अर्थ यह है कि जो उनके चरण कमलोंका चिन्तन करेगा, उसके समस्त पाप-कर्म भस्म हो जाएँगे।
एक भिन्न दृष्टिकोणसे, इस चिह्नका अर्थ यह भी है कि, बुद्धि एवं हृदयको श्रीमती राधारानीके चरणोंमें लगाकर हरे कृष्ण महामन्त्रका जप करना ब्रह्माण्डके समस्त जीवोंके कल्याणकारी यज्ञ करनेके समान है। ब्रह्माण्ड श्रीकृष्णका एवं यज्ञकी

आहुति श्रीमती राधारानीका प्रतीक है। एवं इनका उत्तम मिलन यज्ञ–वेदीके चिह्नसे प्रतिपादित होता है।

२)पर्वत—यह हरिदास–वर्य श्रीगिरिराज गोवर्धनका प्रतीक है। श्रीगिरिराज सदैव श्रीश्रीराधा–कृष्णके चरण कमलोंकी सेवामें रत रहते हैं। इस चिह्नका अर्थ यह भी है कि श्रीश्रीराधा–कृष्ण सदैव अपने शुद्ध भक्तोंको अपने चरण–कमलोंमें आश्रय देते हैं।

३)शंख—यह चिह्न धर्मके सिद्धान्तोंका प्रतीक है। जब हम शास्त्रानुसार इस सिद्धान्तोंका पालन करेंगे, तो श्रीश्रीराधा–कृष्ण हमारी सब प्रकारके दुखोंसे रक्षा करेंगे।

इसके अतिरिक्त यह चिह्न भक्तोंकी विजयका भी प्रतीक है, क्योंकि इस शंखमें समस्त भवसागर समाहित है, जिसे अब वे सरलतासे पार कर लेंगे।

यह चिह्न जल–तत्त्वका भी प्रतीक है। तीनों लोकोंको पवित्र करने वाली श्रीगङ्गा श्रीकृष्णके चरणोंसे ही निकली हैं। यह चिह्न उस जल तत्त्वका प्रतीक है, जो राधारानीके विरहसे होने वाले श्रीकृष्णके तापको शान्त करता है।

४)कु

राधारानीके अपूर्व नूपुरकी ध्वनिको सुनते रहते हैं। अतः श्रीकृष्ण उनके चरणोंके आश्रयमें ही रहते हैं, एवं इसीसे उन्हें प्रसन्नता मिलती है।

५)गदा—इस चिह्नसे यह सूचित होता है कि किस प्रकार उनके श्रीचरण पापमयी काम वासनाका विनाश करनेमें समर्थ हैं।

इसका अर्थ यह भी है कि उनके श्रीचरण–कमलोंका सम्पूर्ण रूपसे आश्रय लेने वाले भक्तके पूर्वजोंका भी कल्याण हो जाता है। शास्त्रोंके अनुसार कनिष्ठ भक्तकी ७ पीढ़ियों, मध्यम भक्तकी १४ पीढ़ियों, एवं उत्तम भक्तकी २१ पीढ़ियोंका कल्याण हो जाता है।

६)रथ—रथ इस जगतमें जीवोंकी प्राकृत अवस्थाका चिह्न है, एवं सभी जीवोंको उनके श्रीचरण–कमलोंकी दिशामें ही चलना है। इसके अतिरिक्त यह भगवान्‌की असीम कृपाको भी सूचित करना है, क्योंकि वे स्वयं इस रथके सारथी बनते हैं। जो भी उनके श्रीचरण–कमल रूपी रथमें आरुढ़ होकर उनके नित्य धामकी ओर यात्रा करने का प्रयास करता है, वह इस जगतके समस्त प्रकारके क्लेशोंसे मुक्त

हो जाता है।
७) बाण–जो इस जगतकी आसक्तियोंसे मुक्त होना चाहते हैं, एवं श्रीश्रीराधा–कृष्णके चरणोंका आश्रय लेते हैं, यह बाण उनके समस्त प्रकारकी लौकिक बन्धनों एवं कष्टोंका छेदन कर देता है।
८) मछली—जिस प्रकार मछली जलके बिना नहीं रह सकती, उसी प्रकार शुद्ध भक्त उनके श्रीचरण–कमलोंके बिना एक क्षणके लिए भी नहीं रह सकता।
इसका एक अर्थ यह भी है कि श्रीमती राधिका एक क्षणके लिए भी अपने प्रियतम श्रीकृष्णके बिना नहीं रह सकतीं।
इस चिह्नका एक अर्थ यह मनसे भी है। एक मछलीके समान ही मन भी अत्यन्त चंचल एवं अवज्ञा करने वाला है। बहुत जटिल प्रयाससे ही यह धीरे–धीरे श्रीश्रीराधा–कृष्णके चरणोंमें लगता है।
यह चिह्न इस बातका भी सूचक है कि श्रीयुगल–चरण हमारे हृदयमें प्रवेश एवं स्थापित तभी होंगे जब हमारा हृदय निष्कपट एवं शुद्ध प्रेमसे परिपूर्ण होगा। यह मछलीका चिह्न श्रीकृष्णके चरणोंमें भी विराजमान है। गोपियोंके कामको वर्धित करने वाला यह चिह्न कामदेवकी ध्वजा पर विद्यमान है।
श्रीकृष्णके चरणोंमें स्थित यह चिह्न यह सूचित करता है कि उन्होंने कामदेवको भी पराजित कर दिया है, और कामदेवके आत्मसमर्पणकी ध्वजा श्रीकृष्णके चरणोंमे लक्षित होती है। यह चिह्न यह भी स्मरण कराता है कि प्रलयके समय श्रीकृष्णने मत्स्य रूप धारण करके अपने भक्तोंकी रक्षा की थी।

९) पुष्प—यह चिह्न केवल श्रीमती राधारानीके श्रीचरणोंमें है। इसका अर्थ है कि एक पुष्पकी सुगन्धके समान ही उनके श्रीचरणोंकी दिव्य कीर्ति सब जगह फैली हुई है। इसका अर्थ यह भी है कि उनके श्रीचरण पुष्पकी पँखुड़ियोंके ही समान अत्यन्त कोमल हैं।
जिस प्रकार पुष्पके पल्लवित होने पर ही फल बनता है, उसी प्रकार पारमार्थिक फलकी स्थिति तभी दृष्टिगोचर होती है जब वह श्रीमती राधारानीके चरणोंकी छायामें पल्लवित हो।
१०)जौंका बीज—इस चिह्नका अर्थ है कि उनके श्रीचरणोंकी सेवासे भक्तोंको विपुल वैभव की प्राप्ति होती है। इसका अर्थ यह भी है कि जब भक्त उनके श्रीचरणोंका आश्रय प्राप्त कर लेता है, तो उससे पूर्व उसके सहस्त्रों जन्म–मरणकी यात्रा जौंके एक दानेके समान अत्यन्त लघु एवं तुच्छ प्रतीत होती है।

इसका अर्थ यह भी है कि जिस प्रकार जौं कु
करनेके आवश्यक है, उसी प्रकार उनके श्रीचरण सब जीवोंके पोषणका स्रोत हैं।
११)चक्र—यह चक्र हमारे छह प्रमुख शत्रुओं–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मात्सर्य–पर विजय प्राप्त करनेका प्रतीक है। सुदर्शन चक्रके समान यह हमारे मायिक भ्रमको दूर कर सत् चेतनका प्रकाश करता है, जिससे हम अपने असत् कर्मोंके प्रभावसे मुक्त हो सकें।
यह इस बातका भी प्रतीक है कि श्रीमती राधारानी ब्रज–मण्डल रूपी चक्रसे बने अपने राज्यकी रानी हैं।
१२)वक्र रेखा—इसका अर्थ है कि एक भक्तकी अचल भक्ति उसे धीरे–धीरे गोलोक वृन्दावनमें श्रीश्रीराधा–कृष्णके चरणोंकी ओर ले जाती है, जहाँ जाकर कभी उसका पतन नहीं होता।
यह रेखा इस बातको भी सूचित करती है कि ऐसे भक्तोंके क्रिया–कलाप कदापि संदेह युक्त नहीं होते।
इसका अर्थ यह भी है कि उनके श्रीचरणों तक पहुँचनेका मार्ग बहुत सीधा है, एवं हम सभी श्रीश्रीराधा–कृष्णके नित्य दास हैं। इसका अर्थ यह भी है कि उनके श्रीचरण सबसे अधम जीवोंके लिए भी उपयोगी है एवं जो उनके श्रीचरणोंका सम्पूर्ण रूपसे आश्रय लेते हैं, उनका कल्याण करते हैं।
१३) कमल—इसका अर्थ है कि जिस प्रकार जलसे कमलका उदय होता है, उसी प्रकार उन्हींको सबसे श्रेष्ठ लाभकी उपलब्धि होती है, जो सदैव श्रीश्रीराधा–कृष्णके चरणोंको अपने हृदयमें धारण करते हैं एवं उनके नेत्र उनके प्रेमके कारण अश्रुओंसे परिपूर्ण रहते हैं।
जिस प्रकार कमल दिनमें खुलता है एवं रातमें बन्द हो जाता है, उसी प्रकार जो उनके श्रीचरणोंका निरन्तर चिन्तन करते हैं, वे निश्चित ही अपनी भक्तिको पल्लवित होता हुआ अनुभव करते हैं। उनके मार्गसे सभी कपटता एवं अज्ञानता आदि सभी बाधाएँ स्वयं ही हट जाती हैं।
१४) छत्र—यह इस बातका प्रतीक है कि जो उनके श्रीचरणोंका आश्रय लेता है, उसकी जगतकी क्लेश रूपी वर्षासे रक्षा होती है। उनके श्रीचरण विरह रूपी तापसे उनके प्रियतम श्रीकृष्णकी भी रक्षा करते हैं।
यह उस घटनाको भी सूचित करता है जब श्रीकृष्णने ब्रजवासियोंकी रक्षाके लिए छत्रके समान गिरिराज गोवर्धनको उठा लिया था।
इसका अर्थ यह भी है कि उनके श्रीचरणोंका आश्रय लेने वाले जीव महाराजाओंके

समान उत्कृष्ट बन जाते हैं, जिनके सर पर सदैव छत्र रखा जाता है।

१५) कङ्कन—जो सम्पूर्ण रूपसे श्रीमती राधारानीके चरणोंका आश्रय लेते हैं, वे कभी उनके कङ्कनोंकी मधुर ध्वनि सुनते हैं। इसका अर्थ यह है कि ऐसे जीव उनकी अन्तरङ्ग सेवाओंको प्राप्त कर सदैव उनके निकट रहनेका परम सौभाग्य प्राप्त करते हैं।
(?)

१६) अङ्कुश—इस चिह्नका अर्थ है कि उनके श्रीचरणोंका चिन्तन करनेसे साधक अपने हाथी रूपी मनको नियन्त्रित कर सदैव सन्मार्ग पर चल सकते हैं। इसका एक अर्थ यह भी है कि जो उनके श्रीचरणों तक जाने वाले मार्ग पर चलते हैं, वे हाथीके ऊपर बैठे मनुष्यके समान अन्य जीवोंसे श्रेष्ठ हो जाते हैं।
यह इस बातका भी सूचक है कि यद्यपि श्रीकृष्णका चित्त मत्त हाथीके समान है, परन्तु श्रीमती राधारानीके चरण सरलतासे उन पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपने नियन्त्रणमें ही रखते हैं।
१७) ध्वजा—इसका अर्थ है कि उनके श्रीचरणोंका चिन्तन करने वाले भक्तोंको उनके श्रीचरण सदैव की सब प्रकारके भयोंसे अपूर्व सुरक्षा प्रदान करते हैं। यह चिह्न उन गोपियोंकी चिर विजयका भी प्रतीक है, जो सदैव ही उनके श्रीचरणोंका आश्रय ग्रहण किये हुए हैं।
१८) लता—यह लता एक उत्साही भक्तकी यात्राका प्रतीक है। जैसे-जैसे एक भक्त अधिकाधिक मात्रामें उनके श्रीचरणोंका आश्रय माँगता है, वैसे-वैसे उसके हृदयमें भक्ति रूपी लता बढ़ती रहती है।
यह इस बातका भी प्रतीक है कि उनके श्रीचरण सदैव वृन्दावनके वनोंमें ही पाए जाते हैं। श्रीमती राधारानी स्वयं एक लताके समान हैं, जिन्होंने तमाल वृक्ष रूपी श्रीकृष्णके चारों ओर स्वयंको लपेटा हुआ है।
अन्तमें, जिस प्रकार एक लता वृक्षको बलपूर्वक पकड़ लेती है, उसी प्रकार बुद्धिमान मनुष्य उनके श्रीचरणोंको बलपूर्वक पकड़ कर रखता है।
१९) अर्ध-चन्द्र—यह इस बातका प्रतीक है कि किस प्रकार उनके श्रीचरण वास्तवमें अपने भक्तोंके हृदयकी इच्छाओंको पूर्ण करते हैं। जिस प्रकार चन्द्र अपनी शीतल किरणोंसे अमृत वर्षण करता है, उसी प्रकार श्रीश्रीराधा-कृष्णके चरण कमल अपने भक्तों पर अमृत वषर्ण कर उनके त्रितापोंका विनाश कर देते हैं।

जिस प्रकार अर्ध चन्द्र उत्तरोत्तर बढ़ता रहता है, उसी प्रकार जो उनके श्रीचरणोंका निरन्तर गुणगान करते हैं, उनके हृदयमें भक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है।

यह १९ चिह्न इस बातको स्पष्ट करते हैं कि श्रीमती राधारानीके श्रीचरण ही सभी जीवोंकी एकमात्र नित्य आनन्दमयी रक्षा-स्थान हैं।
वृन्दावन ही श्रीश्रीराधा-कृष्णका नित्य आनन्दमयी धाम है, जहाँ वे सदैव विराजमान हैं। श्रीमती राधारानी श्रीकृष्णकी प्रीतिमयी सेवाओंकी प्रतिमूर्ति हैं, एवं श्रीकृष्णसे अभिन्न हैं।
अतः, यह स्पष्ट है कि एक गुरुको अपने शिष्यको यह सिखाना चाहिए कि किस प्रकार श्रीमती राधिकासे समबन्ध स्थापित किया जाए। अतः श्रीगुरुको श्रीमती राधिकाका ही प्रतिनिधि समझना चाहिए।

भक्तिमें प्रगतिके लिए श्रीगुरुकी नितान्त आवश्यकताके विषयमें जीवोंको बतानेके लिए श्रील नरोत्तम दास ठाकु
“गुरु कृपाय कृष्ण मिले, कृष्ण कृपाय गुरु मिले”
अर्थात् कृष्णकी कृपासे हमें गुरु मिलते हैं, एवं इसके पश्चात् श्रीगुरुकी कृपासे हम श्रीकृष्णको प्राप्त कर सकते हैं।

बहुत शोककी बात है कि आजकल दीक्षाकी प्रक्रियामें भी समझौता किया जा रहा है। एक वास्तविक गुरुकी प्राप्तिके लिए हृदयसे श्रीकृष्णसे प्रार्थना करनेकी बजाय अनेकों लोग अपने गुरुका चुनाव किसी व्यवसायी कर्ताके माध्यमसे कर रहे हैं, अथवा अपनी बुद्धिका प्रयोग कर रहे हैं। इस कारण से अनेकों भक्त बार-बार अपने गुरु परिवर्तित कर रहे हैं, जिससे वे वैष्णव अपराध कर सकते हैं।
जिस पद्धतिसे हमें श्रीगुरुको ग्रहण करना चाहिए, उसका वर्णन करते हुए श्रील नरोत्तम दास ठाकु
“वन्दो मुई सावधान मते”
‘वन्दो’ का अर्थ है वन्दना करना, ‘मुई’ अर्थात् मैं, ‘मते’ अर्थात् यथार्थ ज्ञान द्वारा। इसका अर्थ है कि हमें (केवल बाहरी रूपसे नहीं, अपितु) शुद्ध रूपसे आर्द्र होकर श्रीकृष्णसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमें एक शुद्ध एवं वास्तविक गुरु प्रदान करें, जो उदाहरणके लिए, हमें यह शिक्षा दे सके कि हम किस प्रकार श्रीमती राधारानीके नित्य दास बन सकते हैं। जब हमारे हृदयमें ऐसी दृढ़ इच्छा आ जाएगी,

तो श्रीकृष्ण स्वयं हमारे लिए उचित गुरुको भेजेंगे। ऐसे श्रीगुरु अपनी गुरु-परम्परामें अपने पूर्व आचार्य द्वारा नियुक्त होंगे, श्रीगुरुके समस्त लक्षणोंसे युक्त होंगे, एवं एकमत होंगे।
श्रीगुरुका चयन करनेकी इस पद्धतिके आधार पर, मैं अत्यन्त सौभाग्यशाली हूँ कि मैंने अपने जीवनमें इसका स्वयं अनुभव किया है। भगवान् मेरे प्रति अत्यन्त दयालु थे कि मेरे श्रीगुरुमें यह सब गुण विद्यमान थे।
मैं श्रीकृष्णसे यह प्रार्थना करता हूँ कि आजके समाजमें ऐसा वातावरण हो, कि सबके हृदयमें एक ऐसे उपयुक्त गुरुके लिए प्रार्थना करनेका बल हो, एवं उन्हें ग्रहण करनेकी योग्यता हो, जो हमें श्रीमती राधारानीकी दासीका भाव प्रदान कर सकें।

मैं भगवान्से यह भी प्रार्थना करता हूँ कि वे वैष्णव समाजको श्रीगुरुके विषयमें होने वाले विवादोंसे मुक्त रखें। वे तर्क-वितर्कसे रहित होकर, एवं एकताकी भावनासे युक्त होकर श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके प्रेममयी मिशनके मुख्य उद्देश्यको स्थापित करनेमें हमारी सहायता करें।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके मिशनका एक अयोग्य सेवक
बी.बी.बोधायन